ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष : 09, अंक : 34, अप्रैल-जून 2022

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

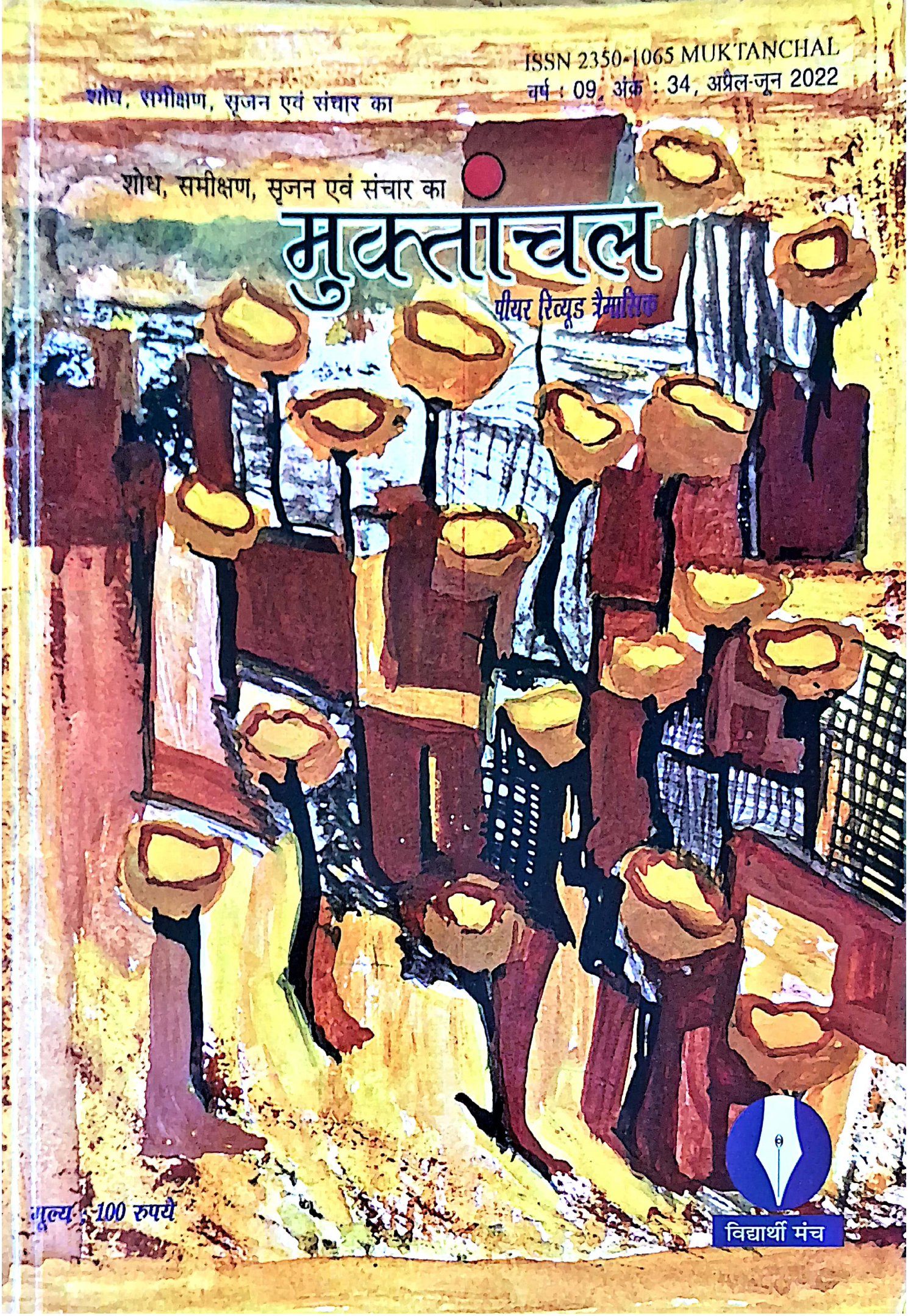

मूल्य : 100 रुपये

विद्यार्थी मंच

Scanned with OKEN Scanner

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संचार

6 संस्तुति

आलेख

8 सुभाषचन्द्र गुप्त — बॉब डिलनः प्रतिरोध की संस्कृति का गायक

16 पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' — अशोक वाजपेयी

25 शशिभूषण द्विवेदी — लीलाधर जगूड़ी : अकविता के तांडव से सभ्यता के पेंचों तक भाया मनुष्य-मन

35 माधव नागदा — युवा मन को संस्कारित करने में सक्षम हैं लघुकथाएँ (संदर्भ पाठ्यक्रम में लघुकथाएँ)

40 रणजीत कुमार सिन्हा — शिवदान सिंह चौहान और हिंदी आलोचना

विमर्श

46 श्रीनारायण पाण्डेय — प्रेमचन्द की लेखकीय प्रतिबद्धता

संस्मृति

53 कौशल किशोर — रामनिहाल गुंजनः रचना विवेक के अप्रतिम उदाहरण

शोधार्थी की कलम से

59 नगीना लाल दास — प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों का स्वरूप एवं महत्व

यात्रा-वृतांत

65 विनोद साव — होसपेट, हम्पी और तुंगभद्रा

कहानी

72 प्रवीण कुमार सिंह — आत्मा की शांति

80 संजय कुमार सिंह — पुनर्जीवन

समय की शिला पर

86 निशांत — जो छपा, वही मेरा है

कविता

89 मनीषा झा — मनीषा झा की दो कविताएँ

90 शिवदयाल — शिवदयाल की तीन कविताएँ

91 लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव — लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की दो कविताएँ

92 राजकुमार जैन — राजकुमार जैन 'राजन' की पाँच कविताएँ

Scanned with OKEN Scanner

बॉब डिलन: प्रतिरोध की संस्कृति का गायक

सुभाषचन्द्र गुप्त

सन 2016 में जब बॉब डिलन का नाम नोबेल सम्मान के लिए घोषित किया गया तो दुनिया के पूरे साहित्य-जगत में गहरी हैरानी की लहर फैल गई थी। यह हैरानी स्वाभाविक भी थी क्योंकि उपन्यास, कहानी, कविता वगैरह डिलन के सृजनकर्म के माध्यम कभी नहीं रहे। यही कारण रहा कि 'स्टॉकहोम' में जब इस पुरस्कार की घोषणा की गई तो पूरी दुनिया के लिए यह एक अचरज का कारण बना। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, किपलिंग, विलियम फॉकनर, जॉन स्टेनबेक, हेमिंग्वे, गैब्रियल गार्सिया जैसे दुनिया के महान साहित्यकारों की कतार में डिलन नहीं आते। गीत लिखने, मंचों पर गाने और एलबम निकालने के कारण डिलन की पहचान गीतकार और गायक की रही है। समूची दुनिया में डिलन को लोकगीतों के 'रॉकस्टार' के रूप में जाना जाता है। इसलिए यह कहा गया कि नोबेल पुरस्कार देने वाली संस्था 'स्वीडिश एकेडमी' ने नोबेल पुरस्कार के मानदण्डों को बदल दिया है।

24 मई 1941 को मिनेसोटा के डुलुथ में एक साधारण परिवार में जन्में डिलन का असली नाम है रॉबर्ट जिमरमेन। उन्होंने किशोर वय में ही हारमोनियम, गिटार, माउथ ऑर्गन तथा पियानों बजाना सीख लिया था और गायन के क्षेत्र में अपने को स्थापित करने के लिए संघर्ष शुरू कर दिया था। 20वीं सदी के साठ के दशक में डिलन ने कला-जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी और अपने गीत, संगीत व गायन के आंदोलनकारी तेवर के कारण विशिष्ट पहचान बनाने में सफल रहे। दो राय नहीं कि डिलन ने अमेरिकी जनसंगीत के साथ जाने-अनजाने अपने को जोड़ लिया है। अमेरिका के लोकसंगीत और लोक गायकी का इतिहास डिलन की चर्चा के बगैर अधूरा माना जाएगा। बड़े पैमाने पर अतीत के भूले-बिसरे प्रेरक चरित्रों, रागों, मनोभावों का एक रासायनिक घोल बनाकर डिलन जिस प्रभावी और विचारोतेजक शैली में लोगों के समक्ष पेश करते रहे हैं, वह अद्‌भुत रहा है। भारत में जिस तरह झूमर, भैरवी, विरहा, बधाइयाँ, समदवन जैसे लोकसंगीत के विविध रूप और राजा भरथरी, सोरठी वृजाभार, आल्हा-उदल जैसी लोक-कथाएँ विस्मृति के कगार पर हैं-इन्हें बचाये रखने के लिए भारतीय लोक-गायकों को डिलन से प्रेरणा लेने की जरूरत है। पाँच दशक से डिलन के जादुई गीत उदासी, उल्लास, निराशा, प्रतिरोध, जिजीविषा की सृष्टि करते आ रहे है।

अमेरिकी बीट पीढ़ी और डिलन

गौरतलब है कि डिलन उस दौर में कला-जगत के सामने आए जब दुनिया के विभिन्न देशों में, यहाँ तक की अमेरिका में भी एक ऐसी युवा पीढ़ी का उभार हो रहा था, जो अपनी सोच और अपने चरित्र में साम्राज्यवाद विरोधी चेतना से लैस थी। यह

Scanned with OKEN Scanner